प्रातःक्लास ओमशांति पिताश्री 11.10.67

रिकार्ड– आखिर वह दिन आया आज– ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चों ने यह गीत सुना। भल गाते हैं जिस दिन के थे मुहताज या करते थे। वास्तव में कोई भी पता नहीं कि बाबा कब आय कर हमको सदगति देंगे। कौन सा बाप आवेगा?कौन सी सदगति देंगे। मुहताज हैं जरूर ;परंतु यह नहीं जानते कि सिरताज कैसे बनेंगे। सिरताज बनेंगे यह भी किसको पता नहीं। गीत तो ठीक है ;परंतु अर्थ नहीं समझते। गीता भी बरोबर है। बाप ने राजयोग सिखाया है। मुहताज से सिरताज बनाया है ;परंतु मनुष्य उनको जानते नहीं। तुम भी नहीं जानते हो। जब सत बाप का संग होता है तब मालूम पड़ता है। बाप बतलाते हैं तुम जो सिरताज थे अब मुहताज बन गए हो। यह बात कोई की बुद्धि में नहीं होगी। तुमको भी मालूम नहीं था कि सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। देवताओं का राज्य कहां गया कुछ भी जानते नहीं। अब बाप ने यह गुह्य राज समझाई है। कोई मनुष्य समझाय न सके। वह तो बाप को ही नहीं जानते। भल शिव की पूजा करते हैं। शिवकाशी नामी–ग्रामी है। कहते हैं शिव वहां वास करता होगा। अब तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा इस शरीर में वास करते हैं। आगे तुम कुछ नहीं जानते थे। अब बाप पढ़ाते हैं तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं। याद की यात्रा में रहते हो और दैवी गुणों का पुरुषार्थ कर रहे हो। यह सिद्ध होता है गरीब निवाज बाप ही इस मुहताज भारत को फिर से सिरताज बनाते हैं। तुम जानते हो ईश्वर हमको राजयोग सिखाय रहे हैं। हम तो योगेश्वरी हैं, ज्ञानेश्वरी भी हैं। ईश्वर हमको योग सिखाय रहे हैं। ईश्वर ही सिखलाते हैं मेरे साथ योग कैसे लगाओ। अभी तुम्हारा ईश्वर के साथ योग है। और जो भी हैं वह योग सिखलाते हैं ब्रह्म अथवा तत्व के साथ। तुम्हारी आत्मा समझती है अभी हमारा बाबा के साथ बुद्धि का योग है अर्थात् उनकी ही याद है। तुम हो गये हो यागेश्वरी, ज्ञानेश्वरी भी हो। ईश्वर तुमको योग सिखाते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चे तुम आत्माओं को योग सिखाता हूं। मुझे ईश्वर कहत हैं। मैं तुम्हारा बाप हूं। आत्मा तो है निराकार। शरीर के उपर ही भिन्न2 नाम पड़ता है। आत्मा का तो वही नाम होता है। उनका फिर यह .....है। उनको शरीर तो है नहीं। उनकी आत्मा का ही नाम है शिव। उनको कहा जाता है परम आत्मा। उंच ते उंच आत्मा। और सभी का नाम है शालीग्राम। उनका नाम है शिव। जिसको रुद्र भी कहते हैं। वह फिर शिव और शालिग्राम मिट्टी का बनाय उनकी बैठ पूजा करते हैं। तुम तो चैतन्य आत्मा हो। अपन को आत्मा समझो। हम आत्मा का योग बाबा के साथ है। हम योगेश्वरी, ज्ञानेश्वरी हैं। हम फिर राज–राजेश्वरी बनेंगे। ईश्वर राजाओं का राजा बनाते हैं। योग भी बाप सिखलाते हैं। ज्ञान भी बाप देते हैं। राजाओं का राजा भी ईश्वर ही बनाय सकते हैं। अब तुम बच्चे जानते हो हम अपनी गवर्मेंट स्थापन कर रहे हैं। गवर्मेंट का हेड कौन है?परमपिता परमात्मा। गीता में दिखाया है कृष्ण भगवानुवाच। तो वह हेड हो गया ;परंतु नहीं। तुम्हारी पांडव गवर्मेंट गाई हुई है। पांडव गवर्मेंट और कौरव गवर्मेंट राज्य दोनों को नहीं है। तुम्हारा स्टैम्प्स भी बना हुआ है त्रिमूर्ति का। त्रिमूर्ति का तो सबको मालूम है। मनुष्य तो बिचारे बिल्कुल ही ईडियट्स हैं। कुछ नहीं जानते। तुम भी नहीं जानते हो। अभी समझाया है। त्रिमूर्ति के उपर है शिव। वह ही ज्ञान का सागर पतित–पावन है। राजाओं का राजा भी बनाने वाला है। उनका स्टैम्प्स जरूर होना चाहिए। सतयुग का स्टैम्प्स तो फिर और होगा। वह तो जो राज्य करेंगे उनका स्टैम्प्स बनावेंगे। जैसे एडवर्ड फर्स्ट ,उनका स्टैम्प्स। फिर एडवर्ड सेकेंड आवेगा तो उनका स्टैम्प्स बनावेंगे। वहां जो भी राजा बैठेगा उनका स्टैम्प्स बनावेंगे। तुम्हारी भी स्टैम्प्स जरूर होनी चाहिए। बाबा कोशिश करते रहते हैं। इसमें डरने की कोई बात नहीं। कुछ भी पत्थर मारेंगे तो बात खिलेगी। केस आदि होगा। ऐसे नहीं कि तुमको जेल में डाल देंगे। डरो मत। बाप समझाते हैं तुम अपनी स्टैम्प्स बनाओ। तुम हो पाण्डव गवर्मेंट। तो तुम बच्चों को नशा चढ़ेगा हमारा भी स्टैम्प्स है। शिवबाबा का स्टैम्प्स चाहिए ना। जिस पर तुम समझाय सकते हो। उनको याद करने से तुम यह बनेंगे। अभी तो तुम ब्रह्माकुमार कुमारियां ढेर हुए हो। बाबा ने यह भी समझाया है प्रजापिता अक्षर जरूर लिखना है। बाबा डायरैक्शन देते हैं ;परंतु उस पर अटेंशन नहीं देते हैं। अच्छे2 बच्चे को भी

माया वार कर देती है। नही तो यह स्टैम्प बनाना तो 7दिन का काम है। बहुत ....होती हैं। गवर्मेंट से पास कराय लेते हैं हम लाख स्टैम्प्स बनवाने चाहते हैं। पैसा दे दो। झट सर्टीफिकेट दे देते हैं। गवर्मेंट का भी तो कोई एक स्टैम्प है नहीं। कब किसका, कब किसका बनाते रहते हैं। तुम कहेंगे हम अपना स्टैम्प्स लगाते हैं। पास तो कराना पड़ता है। झट अलाउ करेंगे। स्टैम्प्स देखकर तुमको भी नशा चढ़ना चाहिए। दिन प्रतिदिन समझाने की युक्तियां रचते जाते हैं। आखरीन तो तुम प्रत्यक्ष होंगे ना। ऐसे गुप्त थोड़े ही रहेंगे। वंदेमात्रम सभी कहेंगे। धरती को तो वंदेमात्रम नहीं कहा जाता। नाम भी गायन है भारत की मातायें। हिंदुस्तान की मातायें कहना शोभता नहीं ;परंतु यह भी राय कौन दे। बाप कहते हैं मैं इस समय सबको राय देने आया हूं। तुम स्टैम्प्स से अच्छी रीति समझाय सकते हो। कोई को भी समझाओ यह बाप है ना। उंच ते उंच। ब्रह्मा, विष्णु,शंकर से भी उंच। वर्सा भी उनसे मिलता है। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर से नहीं। देवताओं से उंच है बाप। ब्रह्मा का किसको भी पता नहीं है। गाते भी हैं आदिदेव और आदिदेवी ;परंतु अर्थ किसको भी पता नहीं है। बाप तुम बच्चों को सब कुछ बैठ समझाते हैं। इसमें कोई भी संशय न लाना हैं समझानी तो बड़ी क्लीयर दी जाती है। पतित–पावन तो बाप ही है। उनको सिखलाना पड़ता है तुम पावन कैसे बनेंगे। गुरू लोग कहते हैं गंगा नदी पतित–पावनी है। तो खुद गुरू तो पतित–पावन नहीं ठहरे ना। फिर अपन को गुरू ही क्यों कहते?तुम बोल सकते हो, तुम कहते हो मैं गुरू हूं ,फिर कहते हो पतित–पावनी नदी है। तो वह सबकी गुरू हुई ना। तुम्हारा भी गुरू वह हो गये ;क्योंकि तुम भी जाते हो पाप धोने। फिर तुम गुरू क्यों बने हो?क्या तुम ले जाते हो इसलिए गुरू हो?परंतु बात करने की बड़ी हिम्मत चाहिए। उनमें क्रोध भी बहुत होता है। झट बिगर(बिगड़) पड़ते हैं। तुम बच्चों को खड़ा होना चाहिए। यहां आते हैं हम रिफ्रेश होने। कोई भी हंगामा नहीं। बच्चे भी साथ में होंगे तो रग जावेगी। बाप कहते हैं देह सहित देह के सब सम्बंधियों को छोड़ो। एक बाप को याद करो। यह देह के सम्बंधी आदि तो सब खतम हो जाने हैं। अपन को आत्मा समझो। एक में मोह रखो ;परंतु फिर कहां लाचारी भी हो जाती है। बच्चों को कहां छोड़ कर आवें। यूं तो प्रबंध हो सकता है ;परंतु कर्मबंधन है जो खैंचता है। तुम कहते भी हो हम जाते हैं शिव बापदादा पास। यह सीखने जाते हैं कि हम नष्टोमोहा कैसे बनें। बाप कहते हैं बच्चे देही अभिमानी हो बैठो। अपन को आत्मा समझो। देह से अलग हो मर कर बैठो अर्थात् देही अभिमानी हो बैठो। आत्माओं को बाप बैठ पढ़ाते हैं। देह का जो भी बंधन है उनसे बुद्धि का योग तोड़ो। तुमको ज्ञान है इन आंखों से जो कुछ देखा जाता है यह सब विनाश हो जावेगा। हम आत्माओं को अब मर जाना है। बाप कहते हैं मीठे बच्चों यह पुरानी दुनियां ,पुराने देह, छी2 सम्बंधी अब छोड़ना है। एक बाप को ही याद करो। अब जाना है स्वीटहोम। मनुष्य मुक्ति में जाने लिए कितना माथा मारते हैं ;परंतु वह सब हैं भक्तिमार्ग। ऐसे और कोई समझाय न सके। तुम बच्चे अब समझते हो हम आत्मा स्वीटहोम में रहने वाली हैं। यहां आते ही हैं पार्ट बजाने। सुख का फिर दुःख का पार्ट बजाना है। अब फिर बाप आया है। कहते हैं अब तुम्हारा सुख का पार्ट चलने वाला है। तुम चक्र कैसे लगाते हो वह भी सुनाते हैं। इस शरीर से ही पार्ट बजाते हो। घड़ी2 सुबह हो उठकर यह खयाल करो। बाबा तुम बच्चों को सुनाते हैं मैं ऐसे करता हूं। शिवबाबा तो ऐसे नहीं कहेंगे। यह कहते हैं मैं ऐसे करता हूं। वह तुमको भी समझाता हूं। अपन को आत्मा समझ पुरानी दुनियां को छोड़ दो। उसमें तो बहुत सम्बंधों से कनेक्शन होता है। यहां तो है ही बापदादा। भाई–बहन। बस। इसलिए गायन भी है मधुबन में मुरली बाजे। मुरली तो जरूर मधुबन में ही बजावेंगे। यहां ही आना पड़ेगा। वह भी समय आवेगा। फिर तुम्हारे में बहुत कशिश रहेगी। आत्मा जितना पवित्र होगी कशिश होगी। प्योर आत्मा है फिर झट उड़ने लग जाती है। सन्यासियों (में) कशिश थोड़े ही होती है। उनको भी पता नहीं पड़ता है

हम जावेंगे कैसे। वह तो बिल्कुल ही प्योर सुई है। सोया भी नहीं। एकदम छोटी बिंदी है। एवर प्योर है। बाकी जो भी आत्माएं हैं उनको जंक लगी हुई है। समझानी कितनी मिलती है। उनको कहा जाता है अनादि बनी बनाई मूर्त। बाप में कितनी कशिश रहती है। सब उनको याद करते हैं हे भगवान। लिंग बनाय रख देते हैं। समझते कुछ भी नहीं। आत्माएं कितना याद करती हैं। सतयुर्ग–त्रेता में याद नहीं करते। वहां तुमको इतनी कशिश नही होती है वापस जाने की ;क्योंकि ही ही सतोप्रधान। जब कट चढ़ती है तो दुःख में याद करते हैं। बाबा आकर हमको पावन बनाओ। तुम अब प्योर बन रहे हो। वह तो एवर प्योर ही हैं। तुम जानते हो हमारी आत्मा भी प्योर थी। हम स्वर्ग के मालिक थे। फिर इम्प्योर बनने से दुःख उठाते हैं। इतनी छोटी सी आत्मा शरीर साथ कितना पार्ट बजाती है। अब उन पर कट चढ़ी है। वह उतरे कैसे?बाप आकर सहज युक्ति बताते हैं। यह बहुत सूक्ष्म बात है। जितना बाप को याद करेंगे तो जंक निकल जावेगी। बाप कहते हैं बुद्धि में जो भी शास्त्रों का भूसा भरा हुआ है वह सब निकालो। गुरुओं के मंत्र आदि सब छोड़ो। इन गुरुओं को भी मारो गोली। बाप किसको कहते हैं, आत्माओं को समझाते हैं। आत्मा कितनी छोटी बिंदी होती है। आत्मा प्योर है तो सतयुग–त्रेता में रहती है। यहां कोई की भी प्योर आत्मा रह न सके। बाप कहते हैं इस संगम पर ही आकर हम सबको प्योर बनाते हैं। प्योर बने तब ही मुक्ति–जीवनमुक्ति का(के) लायक बनें। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समय जब आवेगा शरीर छोड़ने का तो फिर वह वायुमंडल भी तुम देखेंगे। अभी विनाश हुआ कि हुआ। नैचुरल कैलेमिटीज का भी तुम सा. करेंगे। कैसे अर्थक्वेक आदि होती है। यह सब तुम असार देखते रहेंगे। रिहर्सल होती रहेगी। तुम हो गुप्त सेना। और तुम सारे विश्व के मालिक बनने वाले हो। बाप तुमको युक्ति बताते हैं माया पर जीत पाने की। तुम जानते हो शिवबाबा है रचता। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, रचना के आदि,मध्य,अंत को वह ही जानते हैं। और कोई नहीं जानते। तुमको नालेज भी चाहिए। प्योर भी बनना है। प्योर बनकर फिर स्वर्ग में जाय कर राज्य भी करेंगे। इसके लिए वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी बाप समझाय रहे हैं। यह है बेहद की बात। सतयुग के यह ल.ना. बेहद के मालिक थे ना। सतयुग में इन्हों का ही आदि सनातन देवी देवता धर्म था। तुम जानते हो 5000वर्ष पहले देवी–देवताओं का राज्य था। 2500वर्ष तक इन्हों की राजाई थी। बाकी आधा में और2 आते हैं। तुम्हारी उतरती कला होती है। अभी तुम चढ़ती कला में हो। अभी ही तुम उतरती कला और चढ़ती कला को जानते हो। तुम लिखते भी हो भारतवासियों की उतरती कला और चढ़ती कला। अभी तुम मनुष्य से देवता बनते हो। तुम्हारी है चढ़ती कला। फिर 84का चक्र जरूर लगाना है। चढ़ती कला से उतरती कला होती है। सीढ़ी कितनी अच्छी है। इनको अच्छी रीति समझ जावेंगे तो फिर चढ़ती कला के लिए जरूर पुरुषार्थ करेंगे। आत्माएं प्योर बन फिर भाग जावेंगी। इसलिए गाया जाता है सेकेंड में जीवनमुक्ति। बाप को बच्चा हुआ और वारिस बना। यहां भी शिवबाबा को जाना और स्वर्ग का मालिक बना। बाकी मैनर्स भी अच्छी चाहिए। इस समय मनुष्यों की क्वालिफिकेशन अच्छी नहीं है। तुम जानते हो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने से बैड क्वालिफिकेशन बदल जावेगी। देवताओं के दैवी क्वालिफिकेशन का गायन करते हैं। यह सर्वगुण सम्पन्न.....हैं। भारत का प्राचीन क्वालिफिकेशन देखो कैसे थी। अभी क्या है। बाप आते हैं फिर से क्वालिफिकेशन प्रांत कराने। और धर्म वाले तो क्वालिफिकेशन से समझ न सके। भारतवासियों की ही क्वालिफिकेशन न थी। आदि सनातन देवी देवता धर्म का हो तब इन बातों को समझ सके। भारतवासियों की ही क्वालिफिकेशन थी। आदि सनातन देवी देवता धर्म का हो तब इन बातों को समझ सके। कौवा मिसल कांव–कांव करते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं समझते। अभी बाप तुम्हारी बुद्धि में सारी नालेज देते हैं। बार2 समझाते है। याद की यात्रा पर पूरा अटेंशन देना है। याद में रहने से कब भी तुम्हारे से उल्टा कर्म होगा नहीं। लॉ ऐसे कहते हैं। अपन को अशरीरी समझते हो फिर उल्टा काम किससे करेंगे?अशरीरी होने से उल्टा काम होगा ही नहीं। बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। युक्तियां तो बहुत समझाते रहते हैं। टाइम भी बच्चों को

बहुत मिलता है। अपन को आत्मा समझ बाप की याद में रहने की युक्ति बतलाते रहते हैं। सवेरे उठकर बाप की याद में बैठ जाओ। मनुष्य तो सवेरे उठ भक्ति करते हैं। मंदिर में जावेंगे ,माथा टेकेंगे। हाथ जोड़ेंगे। जहां मंदिर देखा सर जरूर नीचा करेंगे। वह सब है भक्तिमार्ग। घड़ी2 माथा टेकते रहते। बाप कहते हैं तुम बच्चे हो। बाप बैठ तुमको पढ़ाते हैं। भक्तिमार्ग की रसम भी खतम करते हैं। बाप कहते हैं मैं तो सर्वेंट हूं। मुझे ही तुम बच्चों के आगे नमस्ते करनी पड़े। बाप कहते हैं मैं तुमको अपने से भी बड़ा बनाता हूं। कहेंगे यह तो .....हैं ना। सन्यासियों के मुख से कब नमस्ते नहीं निकलेंगे। वह तो अपन को बहुत बड़ा समझते हैं। यहां बाप अर्थ सहित समझाते हैं। गायन भी है परमपिता परमात्मा निराकारी,निरअहंकारी है। वह जब आये,शरीर में बैठे तब तो अपना परिचय देवे। अभी तुम प्रैक्टिकल में देखते हो। बाप कैसे बैठकर हम आत्माओं को पढ़ाते हैं। तो धारणा करनी चाहिए। यहां तुम सब हो बाप के बच्चे। बाप कहते हैं बच्चों को हाथ जोड़ने की दरकार नहीं। घर में हाथ जोड़ते हैं क्या?तुम तो बच्चे खेलो, कूदो। बाप को जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होगा। यह बहुत सहज भी है तो बहुत डिफिकल्ट भी है। इसमें ही युद्ध चलती है। 84के चक्र की कहानी को भी समझाना तो बहुत सहज है। इसमें माया कुछ नहीं करती। फट से बुद्धि में बैठ जाता है। बाकी कहते हैं बाबा आप की याद घड़ी2 भूल जाते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं योग अक्षर में मूंझो मत। यह तो याद बहुत सहज है। भक्तिमार्ग में भी कहते हैं हे शिवबाबा, वो(ओ) भगवान। यह कौन याद करता है?आत्मा। आत्मा का शारीरिक बाप तो है। फिर शिवबाबा को याद क्यों करती है?वह फिर कौन सा बाप है?समझते हैं बरोबर हम आत्माओं का बाप तो वह है। वह है बेहद का बाप। तो जरूर वर्सा भी बेहद का देता होगा। बाप कहते हैं मैं हर 5000वर्ष आता हूं। बाप कितना अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। मीठे बच्चे आगे भी तुम बाबा–बाबा कहते थे। अब बाप तुमको प्रैक्टिकल में तुमको मिला है। तुमको बाप ऐसा सर्वगुण सम्पन्न.....बनाते हैं। जरूर बाप ने ही यह गुण भरी होगी। बाप में ही अगर कोई अवगुण है तो बच्चों को भी ऐसा सिखलाते हैं। खुद भी विकारी है तो बच्चों को भी काम कटारी चलाना सिखलाते हैं। वह रसम–रिवाज रावण राज्य की अब बंद होती है। अब तो रामराज्य स्थापन होता है। लोकलाज कुल की मर्यादा अब खतम होनी है। चित्रों में कितना क्लीयर दिखाया है। सतयुग दिन, कलियुग रात। कितना फर्क है। वह सुख, वह दुःख। अभी यह है तुम्हारा पुरुषोत्तम संगमयुग। वहां तमोप्रधान ,वहां सतोप्रधान। तो संगमयुग पुरुषोत्तम हुआ ना। इन बातों को समझेंगे भी वही जिन्होंने कल्प पहले भी समझा है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार देवताओं की अब सैम्पलिंग लग रही है। गवर्मेंट झाड़ों का सैम्पलिंग लगाते हैं। बाप भी आकर फूलों का सैम्पलिंग लगाते हैं। यह भी सैम्पलिंग लगाने का फैशन अभी ही निकला है। यहां मनुष्यों को कांटे से फूल बनने का उत्सव है। मनाते हैं। वह सब मेले लगते हैं। कोई मेला महीना/दो महीना ,यह मेला तो है ही है। बाप बच्चों से मिलते ही रहते हैं। उन मेले में तो मैले बनते हैं। यहां तुम उझल बनते हो। इन देवताओं जैसे और फिर विश्व का मालिक भी बनते हो। अभी तुम समझते हो आखिर वह दिन आया आज। हम फिर से बाप से वर्सा लेने आये हैं। बाप राजयोग सिखाय रहे हैं। उंच ते उंच बाप ही आय सबको पूज्य बनाते हैं। शंकराचार्य भी देखो पुजारी है ना। तुम अखबार में भी डाल सकते हो। पुजारी फिर अपन को पूज्य कैसे कह सकते?बाबा ने समझाया है तुम स्टैम्प्स भी बनाओ। उस पर समझाना है। तुम विकारी ,भ्रष्टाचारियों के स्टैम्प्स निकालते रहते हो। यह बेहद का बाप कहां गया?इनको तो फिर त्रिमूर्ति का निकालना पड़े। बाप बिगर त्रिमूर्ति किस काम का?समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। अच्छा ,बच्चों को गुडमार्निंग। ओम।

डायरैक्शन– गीता सप्ताह लिए जो प्रोग्राम लिखा गया था नवम्बर मास में मनाने का वो अब फिर त्रिमूर्ति शिव जयंती के समय गीता सप्ताह मनाना है। ओम।

नोट– जबलपुर का सेंटर का टेलीफोन न. 2107 ओम।